(9)

DESHBANDHU COLLEGE
15/5/17
LIBRARY
Kalkaji, New Delhi

[This question paper contains 2 printed pages]

**Your Roll No.** : .....

**Sl. No. of Q. Paper** : **8694** **GC-4**

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi**

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Semester : II

***Time : 3 Hours*** ***Maximum Marks : 75***

**विद्यार्थियों के लिए निर्देश :**

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा पर प्रकाश डालिए । 14

**अथवा**

रीतिकाल के नामकरण पर विचार कीजिए ।

2. आदिकालीन हिन्दी साहित्य का राजनीतिक और सामाजिक परिवेश स्पष्ट कीजिए । 14

P.T.O.

**अथवा**

आदिकालीन लौकिक साहित्य की विशेषताएँ बतलाइए।

**3.** भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 14

**अथवा**

सूफी काव्य की प्रवृत्तियाँ बताइए।

**4.** रीतिकाल की युगीन पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए। 14

**अथवा**

रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ स्पष्ट कीजिए।

**5.** (क) किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [6, 6]

(i) रासो काव्य

(ii) राम-भक्ति काव्य

(iii) ज्ञानाश्रयी शाखा

(iv) रीतिमुक्त काव्य

(ख) किसी **एक** पर टिप्पणी कीजिए : 7

(i) अमीर खुसरो

(ii) मीराबाई

DESHBANDHU COLLEGE
LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages]

**Your Roll No.** : .....

**Sl. No. of Q. Paper** : **8695** **GC-4**

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi CBCS**

Name of the Paper : Hindi Kavita (Reetikalin Kavya)

Semester : II

***Time : 3 Hours*** ***Maximum Marks : 75***

**विद्यार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :**

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. केशव की काव्यकला का विश्लेषण कीजिए। 12

**अथवा**

रहीम के भाव-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

2. 'बिहारी की वाग्विदग्धता' का परिचय दीजिए। 12

**अथवा**

'बिहारी के श्रृंगार चित्रण' की विशेषताएँ बताइए।

**3.** 'घनानंद के काव्य में प्रेम की धारा प्रवाहित हुई है' – सोदाहरण विवेचन कीजिए। 12

**अथवा**

'नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन' पंक्ति के आलोक में घनानंद की काव्यभाषा की विशेषताएँ लिखिए।

**4.** भूषण के काव्य-शिल्प पर विचार कीजिए। 12

**अथवा**

नीति-कवि के रूप में गिरिधर कविराय का मूल्यांकन कीजिए।

**5.** सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12

(क) हाथी न साथी न घोरे न चेरे, न गाँव न ठांव को नांव बिलैहै ।

तात न मात, न मित्र न पुत्र न बित्त न अंगै हू संग न रैहै।

केशव काम को राम बिसारत और निकाम न कामहि ऐहै।

चेत रे चेत अजू चित्त अंतर अन्तक लोक अकेलहि जैहै ।

**अथवा**

प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाहिं।
रहिमन मैन तुरंग चढ़ि, चलिबो पावक माहिं।
रहिमन पैड़ा प्रेम को, निपट सिलसिली गैल।
बिछलत पाँव पिपीलिका, लोग लदावत बैल।





(ख) इंद्र जिमि जम्भ पर बाडव सुअम्भ पर रावन सदम्भ पर रघुकुल राज है।

पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।

दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुण्ड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।

तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर त्यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।

**अथवा**

चिंता ज्वाल सरीर की, दाह लगे न बुझाय
प्रकट धुवां नहिं देखिए, उर अंतर धुंधवाय
उर अंतर धुंधवाय, जरै जस कांच की भट्टी
रक्त मांस जरि जाइ, रहै पांजरि की ठट्टी
कह गिरिधर कविराय, सुनो रे मेरे मीता
ते नर कैसे जियैं, जाहि व्यापी है चिंता।

**6.** दिए गए निर्देशों के अनुसार किन्हीं दो अवतरणों का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए। 12

(क) रूप निधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नैकु निहारे।

दीठि थकी अनुराग छकी मति लाज के साज समाज बिसारे।

एक अचंभौ भयौ घनआनंद हैं नित ही पल पाट उघारे।

टारें टरै नहीं तारे कहूं सु लगे मनमोहन मोह के तारे।

**(भाषा सौन्दर्य)**

(ख) घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि पुंज
जमुना तीर तमाल तरु मीलित मालती कुंज
रनित भृंग घंटावली झरति दान मधु नीर
मंद मंद आवत चल्यौ कुंजर कुंज समीर

(प्रकृति सौन्दर्य)

(ग) मीत सुजान अनीति करौ जिन हाहा न हूजिए मोहि अमोही
दीठि कौं और कहूं नहिं, ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही।
एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहै बसि प्राण बटोही।
हौ घनआनंद जीवनमूल दई कित प्यासनि मारत मोही।

(घनानंद का वियोग बर्णन)

(घ) मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परै, स्याम हरित दुति होइ।
दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति
परति गाँठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति।

(शिल्प सौन्दर्य)

[This question paper contains 4 printed pages.]

(1)

Your Roll No. 2017

Sr. No. of Question Paper : 6095 G

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi

Unique Paper Code : 205202

Name of the Paper : Hindi Paper - V (Uttarmadhyakalin Kavita)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. "भाव और शिल्प" की दृष्टि से रहीम के काव्य की समीक्षा कीजिए। (15)

**अथवा**

देव के सौन्दर्य-वर्णन पर प्रकाश डालिए।

2. बिहारी की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। (15)

**अथवा**

रीतिकालीन वीर काव्य परंपरा में भूषण का स्थान निर्धारित कीजिए।

P.T.O.

3. घनानंद की 'प्रेम-व्यंजना' पर प्रकाश डालिए। (15)

**अथवा**

गिरिधर के काव्य में वर्णित नैतिक आदर्शों की विवेचना कीजिए।

4. किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: (8+8)

(क) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।

टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।

रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।

ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकें तीन।।

(ख) पावक मैंबसि आँच लगै न, बिना छत खाँड़े कि धार पै धावै,

मीत सों भीत, अभीत अमीत सों, दुक्ख सुखी, सुख मैं दुःख पावै,

जोगी है आठ हु जाम जगै, अठजामनि कामनि सौं मनु लावे।

आगिलो पाछिलों सोचि सबै फल कृत्य करै, तब भृत्य कहावै।।

(ग) साजि चतुरंग-सैन अंग मैं उमंग धारि

सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।



भूषन भनत नाद-बिहद नगारन के

नदीनद मद गैबरन के रलत है।

ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल

गजन की ठैलपैल सैल उसलत है।

तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि

थारा पर पारा पारावारा यों हालत है।

5. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) स्पष्ट कीजिए : (7+7)

(क) **निर्देश : भाषा-सौन्दर्य**

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति।

परति गाँठि दुरजन-हियैं, दइ, नई यह रीति।।

(ख) **निर्देश : प्रकृति-सौन्दर्य**

बंदनवार बँधै सब कैं; सब फूल की मालन छाजि रहे हैं।

मैनका गाइ रहीं सब कैं, सुर-संकुल है सब राजि रहे हैं।।

फूल सब बरसैं 'द्विजदेव', सबै सुखसाज कौं साजि रहे हैं।

यौं ऋतुराज के आगम मैं, अमरावती कौं तरु लाजि रहे हैं।।

(ग) **निर्देश : भाव–सौंन्दर्य**

थोरै दिन के कारणे, कौन उपाधि करै

किस जीवन के वास्ते, जग में पचि–पचि मरै

जग में पचि–पचि मरै, आपनी इज्जत खोवै

एक गमावै हुरमत, द्वितीय फजीहत होवै

कह गिरिधर कविराय, जु जीवन मुक्ती लोरै

तजै सर्व का संग, जान रहना दिन थोरै।